अध्याय प्रथम

11 प्रस्तावना 11
अध्याय प्रथम

11 प्रस्तावना 11

महाभारत संसार का सबसे बड़ा काव्य : भारतीय राजनीति का वैद्य-

महाभारत विश्व के अमूल्य ग्रन्थों में से एक है। यह भारतीय साहित्य का ही नहीं, विश्व साहित्य का एक अद्भुत ग्रन्थ है। आकार की विशालता, विषयों की व्यापकता और लोकप्रियता आदि का दृष्टि से वह विश्व-साहित्य में अद्वितीय है।' वस्तुतः महाभारत भारतीय ज्ञान का 'विश्वकोष' है। इसमें अतीत का महान भारत भरा पड़ा है। इसके पृष्ठों को उलटते ही प्राचीन भारतीय समाज, धर्म, दर्शन, विश्वास, परम्परा तथा धारणाओं का चित्र समक्ष उपस्थित हो जाता है। अतः पूर्व से प्रथमित भारतीय संस्कृति तथा सम्प्रदाय ने एक दीर्घकालिन अवधि में जितनी करवटे ली हैं, उनका जिन आयामों में विस्तार हुआ है, उन सबका अधिकतम समावेश महाभारत में हुआ है। दीर्घकालिन अनुभूतियाँ का विचारण होने से जीवन का शायद ही कोई अंग असृता रह गया हो।' अतः भारतीय जन-जीवन की प्राचीन सामाजिक, संस्कृतिक एवं राष्ट्रीय परम्पराओं तथा विचारधाराओं को समझने एवं अध्ययन करने के लिये उपयुक्त सामग्री मिलती है और जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में इससे आज भी प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।' प्रो॰ बार्नेट ने प्राचीन भारत की आत्मा तथा संस्कृति के जिनाशुओं के लिए महाभारत का अध्ययन-अपरिहार्य माना है।'

1. डॉ॰ शंकुन्तला रानी तिवारी : महाभारत में धर्म, पृष्ठ 33।
2. डॉ॰ कामेशवराण भिक्षु : महाभारत में लोककल्पण की राजकीय योजनाओं। (प्रस्तावना, पृष्ठ 11)
3. डॉ॰ सुमेश विहालकार : महाभारत में शास्त्री पर्व का आलोचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 11।
4. "................." the study of the mahabharata is indispensible for those who would learn to understand the spirit and culture of ancient India."
The Mahabharata.............apology and Index. P. IX
भारतीय जनश्रुति में महाभारत पंचम वेद कहलाता है। महाभारत के विषयों की 
व्यापकता और जनता में उसके आदर एवं उपयोग के कारण उसे पंचम वेद मानना नितांत 
उचित है। विषयवस्तु की महत्त्व व आकार की विशालता के कारण इसे महाभारत कहा जाता 
है। मैकडॉनल के मतानुसार इस रूप में महाभारत ग्रीक के 'इलियड' और 'ओडेसे' दोनों 
काव्यों को मिलाकर आकार में उनके आठ गुणं बराबर है, और इस प्रकार वह संसार का सबसे 
बड़ा महाकाव्य है। इसके विशाल आकार की तुलना में लैटिन कवि वर्जिल का 'एनीड' नामक 
महाकाव्य जो लगभग 10,000 पंक्तियों का है, एक छोटी कविता के सदृश जान पड़ता है।
इस ग्रन्थ की विशालता के कारण ही व्यास जी के लिए इसके लेखन की समस्या उपरिक्ष्ठ हुई 
थी। अतः: गणेश सदृश: लेखक होने पर भी महाभारत की रचना में तीन वर्ष लगे। इसकी 
व्यापकता के कारण इस महाग्रन्थ के अध्येताओं ने यह उत्कृष्ट पचलित की है कि जो महाभारत 
में नहीं है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है। स्वतः: इसी ग्रन्थ में कहा गया है कि जो यहाँ है, वहीं 
अन्यत्र मिलेगा, और जो यहाँ नहीं है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

भारतीय जनता के लिए जो भी ज्ञान, शिक्षा आदि अपेक्षित है, वह सब 
महाभारत में मिल जाती है। महाभारत की महत्ता के प्रमाण स्वयं इस ग्रन्थ में पाये जाते हैं।
शौनक मुनि के यज्ञ में महाभारत सुनाने वाले सौते ने इसको सबैभाष्म ज्ञान से परिपूर्ण उत्तम 
इतिहास बताया है। महाभारत के आरम्भ में सौते ने कहा है कि यह महाभारत तीनों लोकों 
में एक महान ज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्हीं के शब्दों में महाभारत सूर्य, चन्द्रमा और 
दीपक के समान प्रक्षामान है। ज्ञान के तिरिक से अन्ये लोगों के लिए यह ज्ञानांजन की 
शलाका के समान आँख खोलने वाला है।

1. ए हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर : वर्याचरी, पृष्ठ 49।
2. महाभारतविवर्त महाभारत पुस्तक 1-आदि पर्व, अध्याय 1, श्लोक 273।
3. मैकडॉनल : ए हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ 284।
4. चौंधर आराम्थोद : महाभारत प्रिफेस पृष्ठ 8
5. यथापि सर्व गृह सत्यं तदच्च प्रतिपादितम्। 
प्रणालो व लेखक : कविशेषतः मुनि विविधता। आदि पर्व अध्याय - 1 : श्लोक 70।
6. आदि पर्व : अध्याय 1, श्लोक 60।
7. स्वागरोहण पर्व : अध्याय 5, श्लोक 48, आदि पर्व : अध्याय 62, श्लोक 52।
8. आदि पर्व अध्याय - 1 : श्लोक 27।
9. आदि पर्व अध्याय - 1 : श्लोक 84।
महाभारत सूर्य के समान अन्धकार को नष्ट करने वाला है। यह महाभारत पूर्ण
चन्द्रमा के समान है, जिससे शृंगार की चौंदी छिटकती है और मनुष्यों के बुद्धिमूलक बुद्धिमूलक
विकसित हो जाती है। यह महाभारत एक प्रज्वलित दीपक के समान है, यह मोह का
अन्धकार मिटाकर लोगों के अन्तःकरण को भलीभाँति जानानी से प्रकाशित करता है। सौते
के शब्दों में जिस प्रकार वहीं में नवनीत, मनुष्यों में ब्राह्मण वेदों में उपनिषद, औषधियों में
अमृत, सरोवरों में समुद्र और वचनपदों में गाय सबसे श्रेष्ठ है, उसी प्रकार इतिहासों में
महाभारत सबसे श्रेष्ठ है। महाभारत में कुछ अनुभव का प्रशिक्षित चरित्र और श्रीकृष्ण का पवित्र
चरित्र वर्णित है। महाभारत के अंग्रेज़ी में संक्षिप्त पदार्थवादक श्री रमेशचन्द्र दत्त ने महाभारत
को एशिया की प्रतिभा का सबसे महान ग्रन्थ माना है। महाभारत के महान विद्वान
डाकॉ वीस्पसो सुकंदकर ने इस ग्रन्थ को भारतीय साहित्य का एक अव्वल मूल्यवान ग्रन्थ
कहा है, जिसे भारतीय परम्परा ने अपना श्रम के द्वारा लगभग दो दस्तार वर्षों से सुरक्षित रखा
है। यह भारतीय परम्परा के सबसे महत्वपूर्ण आदशों का भूमिका है।

वर्तमान शताब्दी के आरंभिक वर्षों में प्रौद्योगिकी ने प्राचीन आदशों को
राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में अक्षम माना था। मैक्स्मूलर एवं व्युमॉल्ट आदि पश्चात्य
विद्वानों की दृष्टि में प्राचीन भारतीय मनोविज्ञान का लक्ष्य मात्र आध्यात्मिक चिन्तन, मनन एवं
मोक्ष प्राप्ति था। इतिहास, राजनीति, राष्ट्र-रूप और अर्थशास्त्र पर उनकी दृष्टि नहीं गयी।
पार्जिटर के मतानुसार प्राचीन भारतीयों ने कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं लिखा है।

1. ध्यानध्यानमध्यर्थे: समाजवादीही तथा भारतसूर्य बुद्धिमोक्ष तस्मां विनीतं तमः।। आ्.40:1081/85
2. आदि परव ओधयय - 1 : श्लोक 86।
3. इतिहास प्रदीपमध मोहपरमाणातिन।। लोकगर्भं कृत्त्वा यथावत् सम्प्रकाशितम्।। आ्.40:101/87
4. आदि परव ओधयय - 1 : श्लोक 765, 766।
5. आदि परव ओधयय - 1 : अन्तर 622 लो 60 30-33।
6. डॉ गुड्डमनकर : वीनित्य आफ महाभारत, पृष्ठ 41।
7. डॉ गुड्डमनकर : वीनित्य आफ महाभारत, पृष्ठ 28, 30।
9. मैक्स्मूलर : ए हिस्ट्री आफ एशियन संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ : 16
10. एफ.ई. पॉटिंग : इन्फांडियन हिस्ट्रीरिकल ट्रेडरेक्यु, पृष्ठ : 2
ऐतिहासिक बौध के अभाव के कारण संस्कृत साहित्य के इतिहास में सही कालक्रम नहीं मिलता है। दो शकुंतला रानी तिवारी का मत है कि पश्चिमी विद्वानों की मुख्य आपत्ति इतिहास के कालक्रम को लेकर है। कालक्रम और घटनाओं ये इतिहास के दो मुख्य तत्त्व हैं। प्राचीन भारत के इतिहास में कालक्रम के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य हैं, इसका एक कारण तो भारतीय इतिहास और साहित्य की प्राचीनता है। विक्रम संवत् से पूर्व का कोई संवत् भी संसार में नहीं मिलता है। दूसरे कालक्रम की अपेक्षा प्राचीन भारतीयों का ध्यान घटनाओं तथा इससे लक्ष्य होने वाले जीवन के सत्यों की ओर अधिक रहा। घटनाओं में कुछ कल्पना की अतिरंजना तथा कुछ अलौकिकता का पुट अवश्य है फिर भी प्राचीन इतिहास में विशेषतः महाभारत में प्राचीन घटनाओं का बहुत कुछ यथार्थ रूप मिलता है। घटनाओं के इस रूप को इतिहास ही कहा जायेगा। इसी आधार पर महाभारत को इतिहास मानना उचित है।

1. मैकडोनल : ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरॉर्चर, पृष्ठ 10।
2. दो शकुंतला रानी तिवारी : महाभारत में धर्म, पृष्ठ 48।
3. आदि पर्व, अध्याय 62, श्लोक 20।
4. आदि पर्व, अध्याय 2, श्लोक 39।
5. आदि पर्व, अध्याय 1, श्लोक 54।
6. आदि पर्व, अध्याय 1, श्लोक 86।
7. आदि पर्व, अध्याय 2, श्लोक 284।
8. दो शकुंतला रानी तिवारी : महाभारत में धर्म, पृष्ठ 62।
प्राचीन वृत्त के अर्थ में इतिहास की भारतीय परम्परा बहुत प्राचीन है। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, आदि प्राचीन ग्रन्थों में इतिहास शब्द का उल्लेख मिलता है। वैदिक यज्ञ के अवसर पर इतिहास की कथायें कही जाती थीं। महाभारत से ही विदित होता है कि जनमेजय के सर्पयज्ञ में वैशम्पायन ने तथा शौकन के द्वारवेत्ता वर्षीय सत्र में उग्रधारा सीता ने महाभारत सुनाया था। महाभारत में इतिहास की जो परिभाषा मिलती है, उसमें भी कथावृत्त तथा उसके आध्यात्मिक प्रयोजन का ही महत्व माना गया है। इतिहास के आध्यात्मिक प्रयोजन के कारण ही उसमें धर्मशास्त्र के सर्वोत्तम का समावेश हो गया है। इसी दृष्टिकोण के कारण हमारे प्राचीन इतिहास काव्यमय हैं। रामायण और महाभारत के इतिहास काव्यमय हैं। इन्हें इतिहास के साथ-साथ महाकाव्य भी माना जाता है। वस्तुतः इनमें काव्य के अनेक गुण विस्मयमान हैं, जिन्हें उरका ऐतिहासिक महत्व भी कम नहीं है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि देश की प्राचीन जातीय दिनित्त्व पर धर्म का कलेवर चढ़ा हुआ था। यथापि ऐसा विश्वास अनैतिहासिक है। क्योंकि भारतीय जनता राजीव दिनित्त्व के से न तो अनुभव था और न ही उदासीन। भारत के प्राचीन निवासियों ने जहाँ धर्म, दार्शनिक धिन्तन और आध्यात्मिक से विकास पर विश्वास ध्यान दिया था, वहाँ उन्होंने संसार की एहतियत उन्नति की भी उपेक्षा नहीं की थी। उनकी सम्पत्ति में धर्म का प्रयोजन जहाँ निश्श्वेत की प्राप्ति था, वहाँ साथ ही सांसारिक अभ्युदय भी था।

महाभारत के शास्त्रिपत्र के राजधर्म विश्वास प्रकरण का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय, राजनीतिशास्त्र से भली प्रकार परिचित थे। ऐसी सम्बन्धता है कि महाभारत, रामायण, मनु एवं कौटिय के विचारों में स्वीकृत राजनीतिक मान्यतायें बहुत पहले जनता में विचारवाद हो चुकी थी।

1. किंटरनित्जु : द हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर, भाग-1, पृष्ठ 313।
2. नालिन विमोचन शर्मा : साहित्य का इतिहास दर्शन, पृष्ठ 2।
3. शिवदत्त ज्ञानी : भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 172।
4. हनुमान प्रसाद पोद्योगिक : महाभारत, पृष्ठ 65।
5. ‘यतोभ्युदय निश्श्वेत सिद्धि: स धर्मः’ योगशास्त्र।
महाभारत के युद्ध की घटना और महाभारत के ग्रन्थ की रचना के तिथि-काल का निर्णय यद्यपि कितना ही कठिन अथवा अनिश्चितता अथवा उदाहरण िनितु प्राचीन तथ्यों और घटनाओं की दृष्टि से महाभारत की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है। वर्णवाचरी ने महाभारत की इस यथार्थता की सराहना की है। काल-निर्णय सम्बन्धी कठिनाई से महाभारत का यह ऐतिहासिक महत्व कम नहीं होता। मूल कथा के अतिरिक्त मिलने वाली अन्य कथाएँ महाभारत की ऐतिहासिकता और इसके ऐतिहासिक महत्व को बढ़ाती हैं। मूल कथा के समान इनसे भी भारत की प्राचीन काल की स्थिति विषयक अनेक तत्कालीन समस्याकार बातें जाते हैं। प्राचीन भारत की परिस्थितियों का बोध करना महाभारत की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक देन है। ऐतिहासिक घटनाओं से मनुष्य को शिक्षा मिलती है। इस शिक्षा के दृष्टिकोण से महाभारत का महत्व अत्यधिक हो जाता है।

पारंपरिक फूट और आन्तरिक कलह के वर्तमान भारतीय वातावरण में महाभारत का यह गुहापुष्ट भावी भारतीय जनता के लिये अपनी एकता, अखण्डता और स्वतंत्रता की रक्षा की प्रेरणा हेतु महान संदेश देता है।

महाभारत का रचनाकाल :-

विश्व के इस विशालतम ग्रन्थ का नाम महाभारत तथा रचिता का नाम पराशर कृष्ण हिप्यान व्यास माना जाता है। इतने विशाल आकार के एवं विभिन्न विषयों से परिपूर्ण इस ग्रन्थ की रचना एक ही व्यक्ति ने की या इसके कई रचिता हुये- इस विषय को लेकर विषयों में मत-भिन्नता पायी जाती है। यह लाख श्लोकों के विशाल आकार के ग्रन्थ को एक ही व्यक्ति की रचना मानने में आधुनिक विद्वानों संकोच करते हैं। महाभारत की सामग्री की विविधता के आधार पर भी विद्वान महाभारत में कई प्रकार की रचनात्मक परम्पराओं का सम्बन्धण समझते हैं।

1. डॉ० शकुन्तला रानी तिवारी : महाभारत में धर्म, पृष्ठ 53।
2. वर्णवाचरी: ए एक्स्ट्री एफ संजय लिटरेचर, पृष्ठ 53।
3. विन्टरनिट : ड हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर, भाग-1, पृष्ठ 326, 462।
4. डॉ०. शकुन्तला रानी तिवारी : महाभारत में धर्म, पृष्ठ 71।
पश्चात्य विद्वानों के मतानुसार महाभारत किसी एक व्यक्ति और एक काल की रचना नहीं है। उनके अनुसार अनेक शताब्दियों में कई व्यक्तियों के द्वारा तथा अनेक प्रकार की सामग्री के संयोग से महाभारत का वर्तमान स्वरूप निर्मित हुआ है।

परिचयमी विद्वानों में दालहमान और लैवी महाभारत को एक ही व्यक्ति की रचना मानते हैं। भारतीय परम्परा के विद्वानों में पण्डित इत्नानारायण डिवेशी ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सम्पूर्ण महाभारत वेदव्यास की ही रचना है तथा उसके तीन संस्करण नहीं हुए। उनके अनुसार जय, भारत और महाभारत, महाभारत के तीन संस्करणों के नाम नहीं बरनू उसके तीन पर्यायवाची नाम हैं। उनके अनुसार चौबीस हजार की श्लोक संख्या उपाख्यानों से रहित महाभारत की है। तथा छियतर हजार श्लोकों में उपाख्यान हैं।

महाभारत के अन्तःसाक्ष्य एवं वर्णनों से विदित होता है कि महाभारत संग्राम के बाद व्यास मुनि ने अपने शिष्य वैश्म्यान को महाभारत सुनाया जिसका उदेश्य कौरवों पर पाण्डवों की विजय का बोध कराना था। सम्भवतः तब उसका नाम 'जय' था। इस ग्रन्थ की श्लोक संख्या 8800 मानी जाती है। 'जय' ग्रन्थ का नाम महाभारत के प्रारंभ में ही मंगलाचरण श्लोक में दिया गया है। तथा अन्यत्र भी इसके उलेख हैं। कुछ समय के दृष्टिकोण वैश्म्यान ने अपने लिखे संवाद जोड़कर जनमेजय के नागयज के अवसर पर महाभारत सुनाया। तब इसका नाम 'भारत' प्रसिद्ध हुआ और इसके श्लोकों की संख्या चौबीस हजार हो गयी। अन्त में यह कथानक लोमहर्षण के पुत्र उपश्रवा सीति ने रैमाकेश्वर में सोनक ऋषि के द्वारश वर्षों सप्तम में सुनाया, जिसमें वहाँ पूरी गये प्रश्नों के उत्तर भी शामिल हुए। इससे इसके श्लोकों की संख्या बढ़कर एक लाख हो गयी एवं इसका नाम महाभारत प्रसिद्ध हुआ।

1. विन्दुनियन्त्रण : द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-1 पृष्ठ 326।
2. विन्दुनियन्त्रण : द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-1 पृष्ठ 316।
3. विन्दुनियन्त्रण : द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-1 पृष्ठ 459।
4. गीता प्रेस का महाभारत वर्ष 3 संख्या 11, 110
5. नारायण नमकुद्र नर चैत नराचितमु।
   देवी सतस्वति व्यास तति। जयमुद्यिरयैत। (मंगलाचरण श्लोक, महाभारत)
6. 'जय' नामोत्तियोऽहम्, पौं बलदेव उपाख्याय : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 93।
ईसा की पूर्व शताब्दियों में महाभारत के नाम का उलेख मिलता है। ईसा की पहली शताब्दी के मध्य में दक्षिण आने वाले डायोक्सिटोम नामक यात्री ने लिखा है कि उसके समय में एक लाख श्लोकों का महाभारत जिसे उसने भारत का इलियड कहा है, प्रसिद्ध एवं प्रचलित था। किंतु आधुनिक विद्वान इसको महाभारत की शतसाल्पक संहिता का प्रमाण नहीं मानते। इन विद्वानों का मत विकासवादी है। उनके अनुसार अनेक व्यक्तियों, कई संस्करणों और विभिन्न प्रश्नों के द्वारा महाभारत की शतसाल्पक संहिता का रूप निर्धारित हुआ है।

ईसा की पूर्वी शताब्दी पूर्व के दान पात्रों में एक लाख श्लोकों का महाभारत का उलेख मिलता है। इससे प्रतीत होता है कि लगभग दो हजार वर्ष से एक लाख श्लोकों का महाभारत प्रचलित है। आश्वलायन गृहसूत्र में महाभारत के अस्तित्व का सर्वप्रथम उलेख मिला है।

आश्वलायन गृहसूत्र का समय इसवीं सदी लगभग चार से वर्ष पूर्व माना जाता है। और आश्वलायन गृहसूत्र से पहले उपलब्ध किसी साहित्य में महाभारत के नाम का वर्णन नहीं मिलता है। अतः पाश्चात्य विद्वान महाभारत की रचना का समय पौंचवी शताब्दी ईसा पूर्व मानते हैं।

बौधायन के गृहसूत्र में भगवद्गीता का एक श्लोक प्रमाण सूत्र में उद्धृत किया गया है। जबकि गीता महाभारत का ही एक अंग है। आश्वलायन एवं बौधायन गृहसूत्र का समय इसवीं सदी से लगभग चार से वर्ष पूर्व माना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि महाभारत रचना की प्राचीनतम अवधि ई0पूर्व मानवी शास्त्रवी आदि कुछ जर्मन विद्वानों का अनुमान है जो अविश्वसनीय प्रतीत होता है कि महाभारत का आधुनिक रूप ईसा की नवम्भे व दशम्भे शताब्दी के मध्य हुआ होगा।

1. मैकडोनल : ए हिस्ट्री आफ संस्कृत विद्वेचर, पृष्ठ 290।
2. वित्तमणि विनयक वैध : महाभारत भीमाना, पृष्ठ 43।
3. बिन्नरिन्ड्रा : ए हिस्ट्री आफ इण्डियन विद्वेचर, भाग-1, पृष्ठ 316।
4. मैकडोनल : ए हिस्ट्री आफ संस्कृत विद्वेचर, भाग-1, पृष्ठ 289।
5. सुपत्रमु - जैयन्ति - वैश्मयान - पैल - सुम्ब्र भाषा, आश्वलायन गृहसूत्र, अध्याय 3, खण्ड 4
6. मैकडोनल : ए हिस्ट्री आफ संस्कृत विद्वेचर, पृष्ठ 287।
7. गीता 9 - 26
8. बिन्नरिन्ड्रा : ए हिस्ट्री आफ इण्डियन विद्वेचर, भाग-1, पृष्ठ 471।
मैकडोनल : ए हिस्ट्री आफ संस्कृत विद्वेचर, भाग-1, पृष्ठ 287।
नर्मन विद्वान विन्टरनिट्ज इस अनुमान से सहमत नहीं हैं, क्योंकि उनका मत है कि साहित्यिक उल्लेखों और शिलालेखों के प्रमाणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि ईसा के पाँच सौ वर्ष पूर्व महाभारत नाम का ग्रन्थ विद्वान था।

हॉपकिन्स महोदय ने बाहर साक्ष्यों तथा महाभारत के पत्र के आधार पर इस ग्रन्थ का काल निर्धारित किया है। उनका विचार है कि महाभारत को अन्तिम रूप चार सौ ईसवीं तक मिल चुका था।

डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल महाभारत का रचनाकाल पाँच सौ वर्ष ई० पूर्व मानते हैं। श्री चित्तामणि विनायक वैद्य के मतानुसार महाभारत का मूल रूप ३५०-३२० ई०पूर्व में स्वीकार हो चुका था और वहीं वर्तमान रूप है।

भारतीय परम्परा में महाभारत के युग का समय धारा युग का अन्त और कलियुग का आरम्भ माना जाता है। भारतीय ज्योतिष की गणना के अनुसार कलियुग के आरम्भ का समय ईसा से इकताल सौ दो सौ वर्ष पूर्व माना जाता है। पं० इत्तिहासिक दिवेदी ने बड़े विस्तार से लिखा महाभारत के युग और कलियुग के आरम्भ का काल का निर्णय बड़े विस्तृत विवेचन के साथ किया है। पश्चात्तर विद्वान भारतीय ज्योतिष की इस गणना को आदर नहीं देते। युगों की भारतीय कल्पना तथा महाभारत का युगों का साथ सम्बन्ध उन्हें काल्पनिक और अचानक प्रतीत होता है। भारत की संस्कृति और उसका साहित्य बहुत प्राचीन है अतः भारतीयों की रूढ़ि अपने प्राचीनों का समय अधिक प्राचीन मानने की ओर रहती है। यूरोप की संस्कृति और इतिहास अपेक्षाकृत अवरोधी है। अतः भारतीय संस्कृति और इतिहास की प्राचीनता के प्रति उनका उचित आदर नहीं है।

1. विन्टरनिट्ज : द हिस्ट्री आफ इंडियन लिटरेचर, भाग-1, पृष्ठ 463।
2. ई० जॆ० रैफसन : कैमोर जिस्ट्री आफ इंडियन, भाग 1, पृष्ठ 258।
3. अष्टिका प्रसाद बालराम - हिंदू राजतंत्र, पृष्ठ 6।
4. चित्तामणि विनायक वैध - महाभारत भीमांसा, पृष्ठ 307।
5. गीता प्रेस का महाभारत वर्ष-3, संख्या 11, पृष्ठ 135।
6. विन्टरनिट्ज - ए हिस्ट्री आफ इंडियन लिटरेचर, भाग-1, पृष्ठ 474।
वे भारतीय ग्रन्थों का समय यथासम्भव इससे सूची ने आरम्भ के निकट रखने का प्रयत्न करते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में कालगणना का कोई निश्चित आधार न होने का कारण भारतीय ग्रन्थों और व्यक्तियों की प्राचीनता प्रमाणित करने का पर्याप्त साधन नहीं मिलता। इस संदेह की स्थिति में उनके भारतीय ग्रन्थों और व्यक्तियों का समय इससे अधिक से अधिक निकट रखने का अवसर मिलता है। अनिश्चित की अवस्था में प्राचीन ग्रन्थों और व्यक्तियों के सम्प्रभु काल की अवाचीन सीमा के निर्धारण की दृष्टि से उनका यह दृष्टिकोण ठीक है। किन्तु दूसरी ओर यह दृष्टिकोण भारत के प्रारंभिक कालों के सम्बन्ध में एक अनुवांशिक धारणा का पॉशन करता है। भारत के जिन प्राचीन कर्ताओं के सम्बन्ध में काल-निर्धारित के लिए पर्याप्त आधार उपलब्ध नहीं है, उनकी प्राचीनता की आवश्यकता आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुरोध के द्वारा खारिज करना कहाँ तक उचित है, यह विचारणीय है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति और साहित्य बहुत विशाल है तथा उसके अनेक रूप हैं। इतने विस्तृत और विशाल साहित्य का निर्माण और विकास इतने प्राचीन काल में बहुत समय में हुआ होगा। आधुनिक मानवीय से इस विकास की गति की कल्पना नहीं की जा सकती। वैज्ञानिक दृष्टि से केवल बुद्ध का समय निश्चित है। उसके पूर्व काल से कम व्यापक नहीं था। भारतके अन्तर मानक महाभारत, पुराण, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण, वेद आदि के समय का अनुमान लगाया जाता है। कालक्रम की अवाचीन सीमा का निर्णय तो ठीक माना जा सकता है किन्तु इससे प्राचीन ग्रन्थों से वास्तविक काल पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता, वरन् इसके विपरीत उनकी प्राचीनता आया जाता है। इस अवाचीनता के अतिरिक्त प्राचीन इतिहास के आधुनिक काल निर्णय उतने ही संदिग्ध हैं, जितना संदिग्ध कि विश्वासी जनों की तत्समस्थित आवश्यकता को माना जाता है। प्राचीन भारत के ग्रन्थों और व्यक्तियों की अवाचीन अवधि के वैज्ञानिक निर्धारण ने काल-निर्णय के सम्बन्ध में स्वयं अनिश्चित होते हुए भी भारतीय इतिहास के तथ्यों की प्राचीनता को बहुत आधार पहुंचाया है, यह प्राचीन भारतीय इतिहास और उसके अध्ययन की एक आधुनिक विद्वान है।

महाभारत के तीन नामों और तीन वक्ताओं तथा विषयों की मिलनता के आधार पर महाभारत के परिवर्तन आदि के सम्बन्ध में जो मत उपस्थित किये गये हैं, वे केवल
विश्व के महापुरुषों पर दृष्टिपत्र करने से चित्रित होता है कि प्रत्येक महापुरुष में कोई-न-कोई वैशिष्ट्य अवश्य रहा है। उनमें कोई धर्म संस्कारक है तो कोई स्वराज्य-स्वप्न, कोई परम निःस्वरूप परिसर है तो कोई विलक्षण राजनीतिज्ञ, परन्तु कोई ऐसा महामानव दृष्टिगोचर नहीं होता जिसमें इन विभिन्न आदर्शों की एक-साथ परिणति दृष्टि हो। भारत में द्वारका और कल्युनाका के सन्धि-वेला में जन्म लेने वाले अकेले कृष्ण ही ऐसे पुरुष हैं जिनमें लोकार्थ की पूर्ण प्रतिष्ठा अपने चरम उत्कर्ष पर दिखाई देती है। राजनीति और समाजनीति, धर्म और दर्शन, सभी क्षेत्रों में कृष्ण की अद्भुत मेधा एवं विकसित प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

एक और वे महान्‍राजनीति, क्रांति-विधाता, तथा धर्म पर आधुनिक नवीन सामर्थ्य के बढ़ते रूप में दिखाई पड़ते हैं तो दूसरी ओर धर्म, अध्यात्म तथा दर्शन के सुक्ष्म चिन्तक एवं विवेचक के रूप में। उनके समय में भारत गांधार से लेकर संसारी पर्वतमाला तक क्षेत्रिय राजाओं के छोटे-छोटे स्वतंत्र किन्तु निरंकुश राज्यों में विभक्त हो चुका था। इन्हें एकता के सूत्र में पिरोकर समग्र राष्ट्र को एक सुदृढ शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत लाने वाला कोई नहीं था। एक चक्रवर्ती सम्राट के न होने से विभिन्न माण्डलिक राजा नितान्त स्वेच्छाप्राप्त, तथा श्रद्धाप्रेक्षक हो गये थे। मथुरा का कंस, मगध का जरासंध, चैत्य देश का शिशुपाल तथा हरितनासुक पर्वत का दुर्योधन, सभी दुःस्त, विलासी तथा दुराचारी थे। कृष्ण ने अपनी अद्भुत चालुरी, नीतिमंत्र तथा कृत्तितितज्ञता से इन सभी अनाचारियों का मुलोच्छेद किया तथा युद्धस्थिति के रूप में धर्मराज एवं अजात-श्रूत्र का विरुद्ध धारण करने-वाले एक आदर्श राजा का अखण्ड चक्रवर्ती सार्थभीम साम्राज्य स्थापित किया।

महाप्राण व्यास ने -

तत्र योगेश्वरः कृष्णोऽयत्त पार्थो धनुधर्षः ।
तत्र श्रीविष्णुभुविष्णु नीतिनितितिर्मम् ॥

कहकर जिस योगेश्वर कृष्ण और धनुधर्ष राज्य के साथ श्री, विजय और अचल विमृत्ति एवं नीति का अविनाशी सम्बन्ध जोड़ा, वे मध्यकालीन पुराणकारों, साम्राज्यिक
आय्ये सम्पन्न लेखकों और कवियों के हाथों में पड़कर ‘चौराघ्राण्य पुरुष’ बन गये। जहाँ कृष्ण है वहाँ धर्म है और जहाँ धर्म है वहाँ जय है’ इस उक्ति को विस्मृत कर भारतवासियों ने नाना प्रकार के दोरारोपण लगाये कृष्ण चरित्र को विख्यात कर दिया। संस्कृत और हिन्दी के कवियों, पुराण लेखकों तथा धर्मकारों ने उनके चरित्र पर मनमाने आशेप और आरोप लगाये।

फलतः उनके अमल-धवल चरित्र की पावन मन्दाकिनी में अनेक-अनेक अपावन एवं कलुवित धारायें ऐसी भी आ मिली, जिन्से कृष्ण का चरित्र छल-छिद्र पूर्ण, मर्यादाहीन तथा गहिर्त बन गया। कृष्ण के चरित्र को पौराणिक शैली में वर्णन करने वाले ‘ब्रह्मचर्यृतपुराण’ ने तो राजा-कृष्ण के प्रसंगों को अंतर्निवृत्त पूर्ण एवं वासनात्मक क्रियाएँ से विचित्र किया है, उसका उल्लेख भी शिष्टाचार के प्रतिकूल माना जा सकता है।

‘गोपाल सहस्त्र नाम’ ने भगवन-कौरतन के व्याज से कृष्ण को अधोलिखित विशेषणों से सम्बोधित किया है–

‘गोपाल: कामिनी-जार घोर जार शिकाराण्ण’

बल की बल निकालने वाले नैयायिकों ने भी अपने यन्त्रों के मंगलावरण में गोप-वधुदियों के वस्त्रों को चुराने वाले कृष्ण का ही स्मरण किया।’ आज काव्य और संगीत में ‘सौंदर्यिका’ और ‘वनवारी’ जैसे शब्द जो लम्पट नायक के लिये सामान्यतया प्रयुक्त होते हैं, उनका कारण भी यही है।

जयदेव ने संस्कृत की कोमल-कान्त पदावली में राधा-कृष्ण के जिस परकीया-भाव के प्रेम का चित्रण किया, उससे प्रेरणा लेकर मैथिल-कोकिल विशारदि की तथा बंगला-कवि \चण्डीदास ने राधा-माधव की कलिक्रिया के नाम पर उदास श्रूंगार की जो धारा प्रवाहित की, उससे समग्र पूर्वी भारत वासना-पंक से आप्लावित हो गया। मध्यदेश में रसिक कवि सूरदास ने बलभ-सम्प्रदाय में दीक्षित होते हुये भी, जिसमें कृष्ण के बाल-स्वरूप की उपासना का ही विधान है, राधा-कृष्ण के प्रेम की जो व्यज्ञन की वह जयदेव और विशारदि की तुलना में अधिक सुखद-सम्पन्न भले ही हो, परन्तु उनकी यह भजनाश्वेत-पदावली भी उदास श्रूंगार से सर्वाधिक मुक्त ही है, ऐसा-ही कहा जा सकता। हिन्दी के परत्वी कवियों को तो राधा-कृष्ण के नाम

1. डॉ भवानी लाल भारतीय : ब्रह्मचर्यृतपुराण : एक समीक्षा
2. नूतन जलघर रचिये गोपवधुदियुदिकूल घौराय

तस्मै कृष्णाय नमः संसार महीरहस्य बीजाय ।

विशवनाय भंगमन भज्जवार्य रचित ‘कारिकाली’ का मंगलावरण

13
पर स्त्रेष्ट्ट्टा प्रदर्शित करने का प्रयास अवसर ही मिल गया। तभी हो हिन्दी-माधिक रूप रितिकालीन कवियों के लिये कृष्ण एक सामान्य रसिक-नायक की भावभूमि पर उत्तर आये और विलास-लीलाओं के चित्रण में कृष्ण इन शृंगारी प्रकृति के कवियों के लिये उनके चरित्र से खिलाड़ करना अत्यन्त सहज हो गया। रितिकाल के आचार्य कहने वाले कवि भिक्षारीदास के शब्दों में-

“आपने के कवि समुखियें हो कविताएँ,
न तु पराधिका-कन्हाई सुकियन को बहाने है।”

इस प्रकार भलक की झीली आँदों में राधा-कृष्ण की विलास-कोलिका की नगर प्रतिर का कार्य रह गया। कृष्ण-चरित्र में समाप्त होने वाली इस मलिन धारा कृष्ण के लोकसंगीत रूप को तो लुप्त किया ही, उसे सर्वथा वासना-पंकिल भी बना दिया। कृष्ण के विषय में एक और धार्मिक है जिसने लोगों के मर्मित्व में जड़ जमा रखी है और जिसके कारण लोग कृष्ण को प्रवचन, कपटी, युद्ध-सिंघु और महाभारत के भीषण नरसंहार का मूल कारण समझने की भक्ति भूमि कर बैठे हैं। इस धार्मिक का कारण ‘महाभारत’ की घटनाओं को प्रकाशितुकूल न समझना ही है। कृष्ण की शान्ति प्रीति, उनकी विश्व-बंधुत्व की भावना तथा युद्ध की प्रति उनका सहज विराम-भाव लोगों से विस्मृत हो चुका है। उन्हें यह पता नहीं कि कृष्ण युद्ध की अनिवार्यता में विश्वास नहीं करते थे, अपितु किसी अपरिहार्य परिस्थिति में वे उसे समझते हैं के अन्तिम साधन के रूप में भी तभी स्वीकार करते थे, जबकि समझौते के अन्य साधन अकृत-कार्य हो जाते। कृष्ण के लोक-पावन तथा अकृतमंगल-विधायक चरित्र को दूषित करने का यह निकृष्ट प्रयास है कि उन्हें पुराततावी चालों वाला कपटाधीरी और कृष्णनिति समझता जाये। इन्हीं भ्रममूलक धारणाओं के कारण आज कृष्ण का वास्तविक स्वरूप अंकार्सूत हो रहा है और हम उसकी कल्याणकारी प्रकृतियों को हृदयगम करने में असमर्थ हो रहे हैं।

निष्कर्ष-रूप में कृष्ण का वास्तविक रूप बहुत है जो भगवान् कृष्ण दैपाट्यने व्यास प्रभावना से प्रसुत-होकर ‘महाभारत’ में लेखन कर दूत हुआ है तथा अन्य पुराणादि प्राणों में कृष्ण के स्वरूप को विकृत करने की जो चैत्यहरू हुई हैं उन्हें सर्वथा निरूपित एवं निराधार ही माना जाना चाहिये। वस्तुतः कृष्ण आर्य मर्यादा के सर्पक, संपत्ति, उदात्त-चरित्रयुक्त और महान सत्य-संपन्न मानने थे। न्यायवाद से विस्मृत कृष्ण के अंगद, तेजपूर्ण और श्रमाताशील राजनीतिक विचारों को प्रकाश में लाना में इस शोध-प्रभाव का लटु प्रयास है।